मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
अहल्याक मुक्त रामे करिबा साक्षात। रामे सबे ऋषि प्रवेशिब मिथिलात॥ धनुक भांगिया रामे पाइबंत सीताक। अनायसे युद्धे जिनिबंत राजाजाक॥41	अहल्या को साक्षात राम मुक्त करेंगे। श्रीराम सहित ऋषि मिथिला आयेंगे॥ धनुष भंग कर राम सीता पायेंगे। युद्ध में अनायास राजाओं को जीतेंगे॥41
दूत पठाइ जनके आनिबा दशरथ। सीताक रामक दिबा पूरि मनोरथ॥ लक्ष्मण भरत शत्रुघन महामति। आरो तिनि कन्या दिबा तिनिको नृपति॥42	दूत से जनक दशरथ को लायेंगे। कामना पूर्ण कर राम को सीता देंगे॥ लक्ष्मण,भरत शत्रुघन महामति। और तीन कन्याएँ देंगे उन्हें नृपति॥42
चारि पुत्र चारि बधु लैया दशरथ। धरिबा कौतुक राजा अयोध्यार पथ॥ भृगुपति रामे पाचे शुनि धनुभंग। पन्थ निषेधिबा आसि करि महा खंग॥43	चार पुत्र , बहुओं के संग दशरथ। चले आनंदित राजा आयोध्या का पथ॥ धनुर्भंग कथा सुन राम भृगुपति। पथ निषेध करेंगे हो क्रोधित अति॥43
तांक स्तुति नति बुलिबंत दशरथ। रामे परशुरामर छेदिबा स्वर्गपथ॥ रामे भृगुपतिक जिनिबा लीला करि। महोत्सवे प्रवेशिबा अयोध्या नगरी॥ 44	उनकी स्तुति नति करेंगे दशरथ। राम करेंगे छेद उनका स्वर्गपथ॥ भृगुपति को लीला से श्रीराम जीतेंगे। अयोध्या महोत्सव में प्रवेश करेंगे॥44
पाचे दशरथे शत्रुघन भरतक। पठाइबंत दुइको युद्धजितर गृहक॥ रूपे गुणे रामे रंजिबंत सर्ब्बजन। राम राजा हैबंत सबारो एहि मन॥45	फिर दशरथ शत्रुघन, भरत को। भेजेंगे दोनों को युद्धजित के घर को॥ रूप-गुण से राम आनंदित करेंगे। श्रीराम राजा हों सभी आकांक्षा करेंगे॥45
सबारो आनंद राम हैबंत नृपति। दशरथे रामक दिबंत अनुमति॥ जानि कैकेयीये तात पातिब बिघिनि। सत्यजरी नृपतिक छांदिब पापिनी॥46	आनंदित हैं लोग राम होंगे नृपति। दशरथ श्रीराम को देंगे अनुमति॥ यह जानकर कैकेयी विघ्न डालेगी। सत्यडोरी से राजा को पापिनी बांधेगी॥46

भरत हैबंत राजा कैकेयीर मन।	भरत राजा होगा कैकेयी का है मन।
चैध्यय बत्सर प्रति राम याइबा बन॥	चौदह वर्ष के लिए राम जाएँ वन॥
हेन सत्य कराइ दशरथ नृपतिक।	राजा से सत्य वह पालन करायेगी।
समस्ते लोकक शोक दिबेक अधिक॥47	समस्त लोगों को अत्यधिक शोक देगी॥47
पितृ सत्य प्रतिपालि राम रंगमने।	पितृसत्य मान कर हर्षित मन से।
लक्ष्मण जानकी संगे प्रबेशिबा बने॥	लक्ष्मण,सीता सहित जायेंगे वन में॥
पुत्रर शोकत जीव तेजिबा नृपति।	पुत्र शोक में प्राण त्याग देंगे नृपति।
सात दिन बाहि शव हैब कर्म्मगति॥48	सात दिन के शव की होगी कर्मगति॥48
दूत पठाइ बशिष्ठे अनाइबा भरतक।	दूत भेज वशिष्ठ भरत को लायेंगे।
कराइबा राजार यत प्रेतर कार्य्यक॥	राजा के समस्त प्रेत कर्म करायेंगे॥
पितृकार्य करिया भरत बितोपन।	भरत पितृ कार्य का सम्पन्न करेंगे।
रामक आनिबे प्रति प्रबेशिब बन॥49	राम को लाने वन में प्रवेश करेंगे॥49
शुनि रामचंद्रे सिटो पितृर मरण।	सुनकर रामचन्द्र पितृ का मरण।
तिनियो करिबे शोके बिस्तर क्रंदन॥	तीनों शोक से करेंगे बहुत क्रंदन॥
भरते कातर आति करिब रामक।	भरत सविनय कहेंगे श्रीराम से।
मइ सत्य पालो प्रभु चलियो राज्यक॥50	सत्य निभायूँ मैं,प्रभु आप राज्य चलें॥50